अंतरा-शब्दशक्ति

परस्तिश

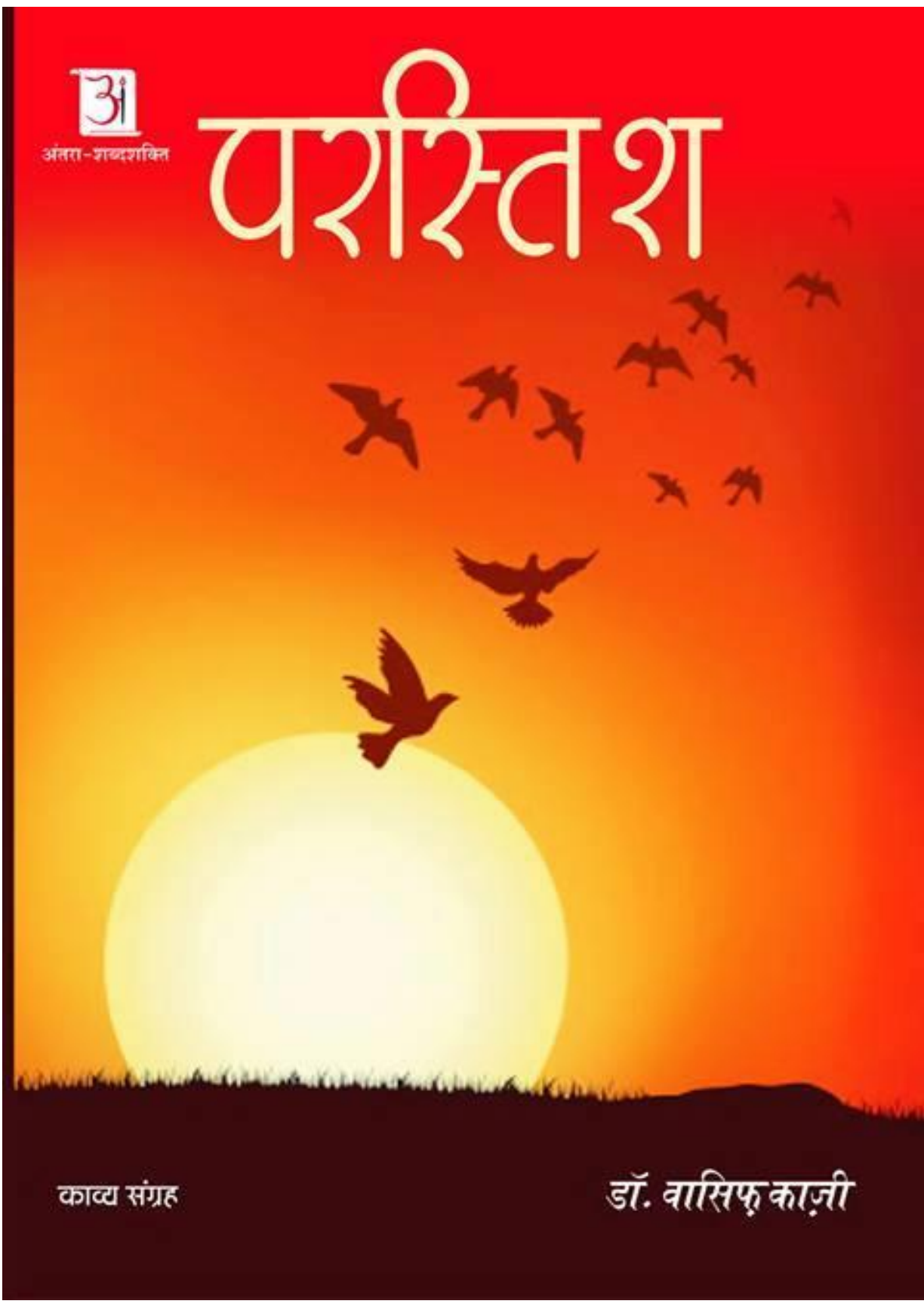

काव्य संग्रह

डॉ. वासिफ़ काज़ी

परस्तिश

(काव्य संग्रह)

डॉ. वासिफ काज़ी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-46-8

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - डॉ. वासिफ काज़ी

मूल्य - ४०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Parastish by Dr Wasif Qazi

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

"साहित्य की स्याही से दिल की बात"

जज़्बात को दिखाया नहीं जा सकता लेकिन अल्फ़ाजों की जादुई दुनिया में अहसास को क़ैद ज़रूर किया जा सकता है और सामईन के रूबरू कविता, ग़ज़ल और अश-आर के ज़रिए लाया जा सकता है। अब तक जो भी लिखा, वो ज़रूर दिल की क़लम और साहित्य की स्याही से लिखा है, काव्य रसिकों (शायरी के दीवानों) ने अपने बेइंतहा प्यार से हौसला अफज़ाई भी की।

#परस्तिश के ज़रिए एक बार फ़िर नये साल की इब्तिदा अल्फ़ाजों के साथ की है जो मेरे इस सफ़र का अगला पड़ाव भी है और मेरे दिल में उठी आवाज़ की शब्द अभिव्यक्ति है।

परस्तिश का अर्थ इबादत या आराधना होता है अर्थात मेरे लिए लेखन भी साधना या काव्य सृजन भी ईश्वर आराधना है।

परस्तिश में, मैंने इश्क में "बिछड़न" के दर्द को चित्रित किया वहीं दूसरी ओर "अधूरी चाहत" के " "समंदर" की व्यथा भी काव्यात्मक तरीके से सुनायी है। या यूं कहें कि रंग-बिरंगे फूलों का बग़ीचा है परस्तिश।

आप इसकी महक ज़रूर लीजिए। आपकी दुआओं से यह गुलशन हमेशा शादाब और गुलज़ार रहे।

आपके प्यार का तलबग़ार

डॉ वासिफ क़ाज़ी इंदौर

अनुक्रमणिका

1.	आबशार	5
2.	बिछड़न	6
3.	उम्मीदें	7
4.	अधूरी चाहत	8
5.	जुदाई की तड़प	9
6.	समंदर	10
7.	फ़लसफ़ा ए ज़िन्दगी	11
8.	मुलाक़ातें	12
9.	राज़ ए इश्क	13
10.	रुबरु	14
11.	आसमान	15
12.	दायरे	16

आबशार

चमन को अपने गुलज़ार रहने दो,
मेरे आशियाने में प्यार रहने दो।
यहां बहती है चाहत की गंगा,
दिल में ख़्यालों के आबशार बहने दो।।

छुपा कर रख़्खी है दिल में मोहब्बत,
आज मुझे कुछ बात कहने दो।
तुम्हारे दिल पर क़ब्ज़ा है मेरा,
मुझे इस दिल का पहरेदार रहने दो।।

तुम माज़ी हो, मुस्तक़बिल मेरे हो,
मेरे लबों पर तुम्हारा नाम रहने दो।
आसान नहीं है तुम्हें भूला पाना,
शाम ओ सहर ज़िक्रे यार रहने दो।।

महकती रहना तुम सांसों में मेरी,
मुझे अपना हमराज़ रहने दो।
धड़कने गुनगुनाये हर वक़्त मुझको,
इश्क का सुरीला साज़ रहने दो।।

बिछ़ड़न

ये कैसी जुदाई, कैसी ये बिछ़ड़न है,
आंहें भरता याद में तेरी मेरा मन है।
सुलगता रहता आंच पर इश्क की,
दो प्रेमियों का यह जीवन है।।

बिछ़ड़ कर जीना अब आसान नहीं है,
बिछ़ड़न न हो तो मुकम्मल प्यार नहीं है।
अब नहीं सहता दिल विसाल ए यार को,
पलकें बिछाए बैठा है ये तो इंतज़ार को।।

बिछ़ड़न न मिले मुझको इश्क में यारा,
दिलों पर प्यार बरसता रहे।
तलाश में तेरी ओ रहगुज़र अब,
मन मेरा यूं ही भटकता रहे।।

ये कैसी तड़प, कैसी ये उलझन है,
आतिश ए मोहब्बत की तड़पन है।
तलाशता रहता वादी ए इश्क में अब,
बावरा आवारा मेरा ये मन है।।

उम्मीदें

छाया है ख़ुमार दिल पर,
एक तेरी धुन सवार है।
खुली आंखों से ख़्वाब देखे,
मन में उम्मीदें हज़ार है।।

ताज़ा है मेरे ज़ेहन में तेरी यादें,
दिल आज भी रोता है।
पा चुका हूं ज़िन्दगी में सब कुछ,
तेरी कमी का अहसास होता है।।

मौसम बदले, ज़माना बदल गया,
दिल की वादी में आज भी बहार है।
लौट कर आओगी पास मेरे तुम,
अब मुझे इतना तो ऐतबार है।।

आया है निखार हुस्न पर,
मन मेरा तो बेक़रार है।
खड़ी हो सामने मेरे तुम,
फ़िर क्यों फ़ासले हज़ार है।।

अधूरी चाहत

देखे थे ख़्वाब दिल ने मेरे,
हसरतें अब भी बाकी है।
ख़ाक हो गया शीशमहल चाहत का,
यादों का धुंआ अभी बाक़ी है।।

हाथों में हाथ डाले किये थे,
उन वादों का क्या होगा।
क़िताबों में मुरझा गए हैं फ़ूल,
उनमें बसी यादों का क्या होगा।।

आज भी धड़कती है तू,
क्यों मुझमें सांसें लेती है।
नहीं है पास मेरे पर,
हर सिम्त दिखाई देती है।।

ख़त्म हो गया अब तो सब,
मोहब्बतें अब भी बाकी है।
दिल में महफ़िलें गुलज़ार है,
तू ही पैमाना है साक़ी है।।

जुदाई की तड़प

तुम्हें शिद्दत से चाहा था,
दुआओं में मांगा है।
कश्मकश है ये ज़िन्दगी,
तेरा इश्क हमसाया है।।

तुमसे दूर होकर अब तो,
दिल मेरा रोता है।
जुदाई में तेरी अब मेरा,
चैन- सुकून ख़ोता है।।

प्यार जीने का सहारा था,
कश्ती का मेरी तू क़िनारा है।
सौप दी है ज़िन्दगी तुझको,
सफ़र ए इश्क में तू सहारा है।।

डर है ख़ो दूंगा तुमको,
दिल हर दम बैचैन होता है।
कोई नयी बात नहीं यारों,
इश्क में तो यही होता है।।

समंदर

जितना पानी समंदर में,
उतनी तुमसे मोहब्बत की थी।
हमनशीं कभी मैंने भी,
यह हसीन इबादत की थी।।

तुम हो अब्र ए मोहब्बत,
चाहत मेरी समंदर है।
उम्मीदों का सावन हूं मैं,
तू इश्क का एक बवंडर है।।

क़ायम जब से चांद सितारे,
मैंने तबसे मोहब्बत की थी।
यादों को समझा मिल्क़ियत मैंने,
दिल ने उनकी हिफाज़त की थी।।

करता रहूंगा मैं यूं तुमसे मोहब्बत,
जब तक सुर्ख़ चाहत रहेगी।
आंखों का पानी न सूखेगा तब तक,
जब तक ये दुनिया रहेगी।।

फ़लसफ़ा ए ज़िन्दगी

ताज़गी से भरी हुई ये ज़िन्दगी,
फ़ूल सी महकती रहे।
ख़ुशियों के आंगन में फ़िर,
परिंदों सी चहकती रहे।।

ग़मों का साया न मंडराये,
रोशनी बन दमकती रहे।
बन कर घटा मोहब्बत की,
नफ़रतों पर बरसती रहे।।

धुंध सहर की तेरा प्यार,
ओस बन कर ठहरती रहे।
तुझसे हैं ख़ुशनुमा पल सारे,
ज़िन्दगी मेरी तुमसे सजती रहे।।

सरगम हर पल इश्क की यूं,
ज़िन्दगी में अब बजती रहे।
प्यार पाकर तेरा हर सांस,
चाहत मेरी निख़रती रहे।।

मुलाक़ातें

भूल जाता हूं ख़ुद को,
तेरे पहलू में आने के बाद।
ढूंढता रहता हूं तुझ को,
अब ख़्वाबों से जाने के बाद।।

मुलाक़ातें ही मोहब्बत को मेरी,
अब सहारा देती है।
वफ़ा के समंदर में कश्ती को,
अब क़िनारा देती है।।

सनम तेरे क़रीब आक़र अब,
मैं कितना सुकून पाता हूं।
ख़्यालों का हमसफ़र बनकर,
रूह में समा जाता हूं।।

बादशाहत मिल जायेगी मुझको,
बस तुझको पाने के बाद।
लौटेंगी बहारें वीरान जिस्म में,
तुमको छू लेने के बाद।।

राज़ ए इश्क

राज़ छिपा है जाने-जां,
तेरी इस ख़ामोशी में।
चैन पाता हूं अब मैं,
तेरी आंखों की मदहोशी में।।

बेक़रार कर देती है अब,
तेरी मासूम अदाएं मुझे।
तेरा अहसास कराती हैं,
ये दिलक़श हवाएं मुझे।।

प्यार छिपा है तेरा जानम,
इन आंखों की गहराई में।
अक़्स नज़र आता है तेरा,
मुझको मेरी ही परछाई में।।

प्यार किया है हमने हमदम,
शिद्दत से उस हरजाई को।
सह न पायेगा ये दिल,
कमबख़्त तेरी जुदाई को।।

रुबरु

हाल ए दिल कहना होता है,
अल्फ़ाज़ नहीं मिल पाते हैं।
रुबरु जब होते हो तुम,
होंठ मेरे सिल जातें हैं।।

असर ए इश्क जब होता है,
जानें कहां ख़ो जाते हैं।
आंखें तो सो जाती है,
ख़्वाब नहीं सो पातें है।।

रोशन था चांद जबसे गगन में,
फूलों में तबसे महक थी।
चाहता था बेइंतहा तुमको सनम,
जीने की हसीन लहक थी।।

अपना तुमको कहना होता है,
जब दूर हमसे हो जाते हो।
भूलाकर हमारे रिश्ते को तुम,
जग में तमाशा कर जाते हो।।

आसमान

सूरज,चंदा और टिमटिम तारें,
आसमान की रंगत है।
मुझ पर चढ़ता रंग इश्क का,
प्रेम पिया की संगत है।।

जनम जनम का प्रेम है अपना,
हवस का इसमें नाम नहीं है।
बिकता है बाज़ार में सब कुछ,
यहां दौलत का काम नहीं है।।

क़द है ऊंचा इश्क का अपने,
ये आसमान भी बौना है।
पाक मुकद्दस इश्क है अपना,
नहीं कोई जादू टोना है।।

ये कैसा फितूर है मेरा,
बस तुमको पाने की ज़िद है।
तुम हो मेरे दिल के मालिक,
ये जान तेरी मुर्शीद है।।

दायरे

ये दायरे, ये फासले अब,
क्या बांटेंगे मोहब्बत को।
वादा किया है तुमसे अब,
निभायेंगे हम चाहत को।।

तसव्वुर से तेरे अब,
इस दिल को करार आता है।
तुमको न देखूं तो दिलबर,
वक़्त भी ठहर जाता है।।

जुदा कर दोगे जिस्म हमारे,
बांट न पाओगे रूहों को।
पता चलेगी प्यार की ताक़त,
दुनिया में मग़रूरों को।।

आशिक है इश्क के शोले,
बुझा न पाओगे आतिश को।
जब जब छूएंगी प्यार की बूंदें,
भूल जाओगे बारिश को।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. वासिफ़ काज़ी

जन्म - 5 अगस्त 1981, बड़वानी

पिता - स्व. बदरुद्दीन काज़ी

माता - श्रीमती शमा काज़ी

पत्नी - श्रीमती शबाना काज़ी

शिक्षा - पी.एच.डी.

ई मेल - Wasifquazi08@gmail.com

ब्लाग - www.wasifquazi.blogspot.in

मो. - 8085901021, (वाट्सएप) 6260232309

पता - 28/3/2, अहिल्या पल्टन, इकबाल कालोनी, इंदौर (म.प्र.)

प्रकाशन - 1. संकल्पना (मार्च 2018)

2. आग़ोश (मई 2018)

3. अदीब (सितम्बर 2018)

अन्तरा- शब्दशक्ति प्रकाशन

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

मातृभाषा

www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९,

अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

मूल्य- 40/-